भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 5806

उत्तर देने की तारीख 30.03.2026

देशों के साथ सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंधों को मजबूत करने के लिए पहल

5806. श्री अरुण भारती :

श्रीमती शांभवी :

श्री राजेश वर्मा :

डॉ. लता वानखेड़े :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने संस्थागत और राजनयिक पहलों के माध्यम से अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंधों को मजबूत करने के लिए कदम उठाए हैं, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) साझा पांडुलिपियों, ग्रंथों और विरासत के संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार को बढ़ावा देने के लिए किए गए उपायों का ब्यौरा क्या है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या दो देशों के बीच सहयोगात्मक अनुसंधान, शैक्षिक आदान-प्रदान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जा रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है, यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(घ) साझा विरासत को बढ़ावा देने में विरासत प्रलेखन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जैसी पहलों की क्या भूमिका है; और

(ङ) इन पहलों का सांस्कृतिक, कूटनीति और वैश्विक सांस्कृतिक संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ने की संभावना है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): संस्कृति मंत्रालय अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए सांस्कृतिक करारों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों और सांस्कृतिक सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापनों (एमओयू) आदि पर हस्ताक्षर, जी20, ब्रिक्स, एससीओ, सार्क आदि जैसे बहुपक्षीय सांस्कृतिक मंचों में भागीदारी और उनके आयोजन के माध्यम से वैश्विक स्तर पर भारतीय कला और

संस्कृति को बढ़ावा देता है। इस मंत्रालय द्वारा वैश्विक भागीदारी स्कीम भी संचालित की जाती है जिसके तहत विदेशों में भारत महोत्सव आयोजित किए जाते हैं और भारतीय मिशनों के माध्यम से विदेशों में स्थित भारत-विदेश मैत्री सांस्कृतिक सोसाइटियों को सहायता अनुदान दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त, विदेश मंत्रालय (एमईए) के अधीन संगठन, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) भी विदेशों में स्थित अपने सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देता है।

(ख): भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने "ज्ञान भारतम" की शुरुआत की है, जो भावी पीढ़ियों के लिए ज्ञान के जीवंत स्रोतों के रूप में राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी में पांडुलिपियों को पुन: खोजने, संरक्षित करने, डिजिटाइज़ करने और साझा करने हेतु एक राष्ट्रीय अभियान है। इस पहल का लक्ष्य एक राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी (एनडीआर) के निर्माण के साथ-साथ व्यवस्थित सर्वेक्षण और प्रलेखन, वैज्ञानिक संरक्षण, डिजिटलीकरण तथा प्रकाशन के माध्यम से भारत की पांडुलिपि विरासत को सुरक्षित और पुनर्जीवित करना है, जिससे अनुसंधान, शिक्षा और सार्वजनिक जुड़ाव के लिए इसकी सुलभता सुनिश्चित हो सके।

(ग): आईसीसीआर अन्य देशों के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रम संचालित करता है। यह विदेशों में स्थित मिशनों/पोस्टों के परामर्श से विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय विद्या पीठ की स्थापना करता है। ये भारतीय विद्यापीठ विदेशी युवाओं के बीच भारतीय सभ्यता के अध्ययन को बढ़ावा देने और भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरी समझ विकसित करने के साथ साथ वैश्विक शैक्षणिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक संबंध भी स्थापित करती हैं। विगत 3 वर्षों के दौरान, आईसीसीआर ने अलग-अलग देशों में विभिन्न कला रूपों की 210 सांस्कृतिक मंडलियों को प्रायोजित किया है। आईसीसीआर प्रत्येक वर्ष 192 देशों के विदेशी छात्रों को भारत में योग और आयुर्वेद सहित स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तर के अध्ययन के लिए 21 विभिन्न योजनाओं के तहत 4000 से अधिक छात्रवृत्तियाँ प्रदान करता है।

(घ): यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड प्रोग्राम का उद्देश्य पांडुलिपियों, अभिलेखों, दुर्लभ पुस्तकों, दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और ऐतिहासिक महत्व के अन्य रिकॉर्ड सहित वैश्विक महत्व की दस्तावेजी विरासत को परिरक्षित और संवर्धित करना है। यह ऐसी विरासत की संरक्षा में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझा प्रयासों को भी प्रोत्साहित करता है, जैसा कि भारत की ओर से हाल ही में शामिल भगवद गीता और नाट्यशास्त्र जैसे इन्स्क्रिपशनों से में परिलक्षित होता है।

(ड.): संस्कृति मंत्रालय और आईसीसीआर द्वारा की गई ये पहल आपसी समझ को बढ़ावा देने, अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और वैश्विक सांस्कृतिक जुड़ाव को सुदृढ़ करने में सहायता करती हैं।

*****